

रोमियों की पत्री 5

Hindi Bible Class - Pr.Valson Samuel

रोमियों अध्याय 7, वाक्य बारह और तेरह के आरंभिक पद पढ़ सकते हैं। इसलिये व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है। तो क्या वह जो अच्छी थी, मेरे लिये मृत्यु ठहरी? कदापि नहीं! परन्तु पाप उस अच्छी वस्तु के द्वारा मेरे लिये मृत्यु का उत्पन्न करने वाला हुआ कि उसका पाप होना प्रगट हो, और आज्ञा के द्वारा पाप बहुत ही पापमय ठहरे। तब परमेश्वर की व्यवस्था पवित्र है आज्ञा पवित्र, निष्पक्ष और अच्छी है लेकिन मृत्यु का कारण पाप है। रोमियों के अध्याय 5 का बारहवाँ पद कहता है। **इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, इसलिये कि सब ने पाप किया।** तब यह उसका नियम है। हमें परमेश्वर के वचन पर सवाल नहीं उठाना चाहिए। जब इसे यहाँ व्यवस्था के रूप में लिखा गया है, तो इसका अर्थ है पवित्रता, पवित्रता हम देखते हैं कि प्रेरितों ने इस प्रकार लिखा, हमें बताना व्यवस्था का अपराध नहीं है जैसा कि हम यहाँ पढ़ते हैं, मृत्यु का कारण पाप है। जैसा कि हमने पिछली Class में सोचा था, अगर हम आत्मा के बिना आज्ञाएँ प्राप्त करते हैं, तो यह जीवन में नहीं आएगी। लेकिन सभी शास्त्र पवित्र हैं। छियासठ पुस्तकों के सभी सिद्धांत परमेश्वर की आज्ञाएँ हैं। फिर हमें उन दो सत्यों को अपने भीतर समेट लेना चाहिए। रोमियों अध्याय 7 का वाक्य 12 हमें बताता है। **इसलिये व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है।** लेकिन पहली बात यह है कि अगर हम इसे आत्मा में नहीं लेते हैं, तो इससे हमें कोई लाभ नहीं होगा। जैसा कि हम अगले अध्यायों में सीखते हैं, पाप परमेश्वर के बच्चे के जीवन में परमेश्वर के वचन के लिए एक बाधा है। यदि वह एक कामुक व्यक्ति है, तो वह व्यवस्था के अधीन नहीं हो सकता। परमेश्वर का वचन मैं विनम्र नहीं हो सकता इसलिए आजकल हर विज्ञान इसका कारण बनाता है कि हमें शरीर में रहना है। जीवन को पाप के लिए मरना पसंद नहीं है। तो आज यही समस्या है। रोमियों अध्याय 7 का वाक्य चौदह पढ़ें। **क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शरीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूँ।** अगली बात जो प्रेरित हमें बताता है वह यह है कि बच्चों की व्यवस्था आत्मिक है। वह सिद्धांत है जिस से हम जानते हैं। अगर हम अध्यात्म में प्रवेश करना चाहते हैं, तो यह हमारा अधिकार होना चाहिए यह केवल आत्मा के द्वारा ही आ सकता है। अगर हमें

आत्मा और सच्चाई से परमेश्वर की आराधना करनी है, तो हमें अपने भीतर फिर से जन्म लेना होगा सत्य की आत्मा वास करनी चाहिए। यह वह प्रार्थना है जो परमेश्वर के सामने आने वाले आध्यात्मिक क्षेत्र से निकलती है। चलो ताली बजाते हैं और नमस्ते कहते हैं और सब कुछ सुंदर दिखेगा परन्तु केवल वही आराधना जो आत्मा से उठती है, वह सिर्फ परमेश्वर के सामने जा सकती है। क्योंकि यूहन्ना चौथे अध्याय के चौबीसवें पद में कहता है **परमेश्वर आत्मा है, और अवश्य है कि उसके भजन करने वाले आत्मा और सच्चाई से भजन करें।** यही बात है। परमेश्वर आत्मा है हमें ईश्वर की पूजा करनी चाहिए जो आत्मा है तब हम केवल आत्मा और सच्चाई से ही आराधना कर सकते हैं। बाकी सिर्फ बाहरी प्रदर्शन है। रोमियों अध्याय 7 का वाक्य चौदह पढ़ें। **क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शरीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूँ।** इसलिए यह हमारे लिए जीवित उपलब्ध नहीं है याद रखें। पुराना दस्तावेज़ और पुराना मनीष भी बाहर जाना है। इसके लिए हमें स्वयं को परमेश्वर के प्रति समर्पित करना होगा। यह तब होता है जब हम समर्पण के साथ परमेश्वर के प्रति समर्पण करते हैं कि परमेश्वर का वचन हम में जीवन के नियम के रूप में लिखा जा सकता है। यह तब होता है जब वह मर चुका होता है या जब उस मृत्यु का कार्य हम में हो रहा है कि हम आत्मा की आज्ञाकारिता में कदम रखते हैं। जब हम बपतिस्मा लेते हैं, तो हमारा शरीर पहले जैसा ही हो जाता है। अर्थात्, इसहाक का वादा किया हुआ वंश पैदा हुआ है, और इश्माएल तम्बू में है, एक अच्छा मूर्ख। तब उसे और दासी को बाहर निकाल देना चाहिए। पुराने दस्तावेज़, पुराने नियम, पुराने कार्यक्रम इसके अलावा, शरीर, हमारा आदमिक आदमी, सूली पर चढ़ाए जाने के योग्य है। यह सीखने की प्रक्रिया है। जब हम व्यावहारिक स्तर पर सोचते हैं तो यह रातो रात नहीं होता है। यहीं पर हमें आध्यात्मिक रूप से अनुशासित जीवन जीने की जरूरत है। ऐसा जीवन होना चाहिए जो आत्मा में बहुत नियमित रूप से रहता हो। प्रार्थना का जीवन होना चाहिए, वचन का अध्ययन होना चाहिए जो वचन आत्मा में प्राप्त करता है। उसके लिए हमें खुद को रोजाना समर्पण करना होगा। सबमिशन वह है जो हर दिन होता है। क्योंकि जब परमेश्वर हमें वचन में छिपा हुआ हर प्रकाशन देता है, तो हम अचानक प्रभु के चरणों में गिर जाते हैं। फिर हमसे पूछा जाएगा कि क्या आज सुबह जब हम उसके सामने थे तब परमेश्वर ने हमें कोई प्रकाशन दिया था। क्या एक शब्द ने हमसे बात की? अगर यह बिना कुछ हुआ है तो यह सिर्फ एक अनुष्ठान है, तो हम पुराने दस्तावेज़ में पड़े हैं। वास्तविक विकास नहीं हो रहा है। इसलिए यदि हम आध्यात्मिकता प्राप्त करना चाहते हैं, तो हमें आध्यात्मिक क्षेत्र में कदम दर कदम बढ़ना होगा। यहाँ प्रेरित प्रकट करता है कि वह

प्राप्त करना चाहता है जो आध्यात्मिक है लेकिन संभव नहीं है क्योंकि वह शारीरिक है। क्योंकि यह खुलासा कर रहा है। परमेश्वर का वचन, सिद्धांत, आध्यात्मिक है। व्यवस्था शब्द का प्रयोग वहां किया जाता है। ये सब परमेश्वर की आज्ञाएं हैं, परन्तु मैं शारीरिक हूँ। रोमियों अध्याय 7 का वाक्य चौदह कहता है: **क्योंकि हम जानते हैं कि व्यवस्था तो आत्मिक है, परन्तु मैं शारीरिक और पाप के हाथ बिका हुआ हूँ।** पन्द्रहवाँ वाक्य **और जो मैं करता हूँ, उस को नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूँ, वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता हूँ।** हमारे जीवन में बहुत से पाप हमारे जाने बिना हो जाते हैं, हमें पता ही नहीं चलता। हम हर दिन अभ्यास कर रहे हैं। हमें इसकी जानकारी नहीं है। जब हम किसी को दोष देते हैं, तो हम नहीं जानते कि यह पाप है। हम आसानी से उनका न्याय करते हैं और उन्हें दोष देते हैं। यह सामान्य रूप से परमेश्वर के बच्चों की एक महान प्रवृत्ति है। जब हम प्रार्थना करने बैठते हैं, तो हम उस एकाग्रता में आने के लिए परमेश्वर के संपर्क में नहीं आते हैं हम सांसारिक बातों पर मनन करते हुए वचन पर ध्यान करते हैं। वह पाप है। जब परमेश्वर हमें प्रार्थना के विषय की याद दिलाता है, तो प्रार्थना न करना पाप है। हम इसे शमूएल की पुस्तक में पाते हैं। लेकिन हम नहीं जानते कि यह पाप का क्षेत्र है। प्रेरित रोम के लोग सातवें अध्याय के पन्द्रहवें पद में यह कहते हैं **और जो मैं करता हूँ, उस को नहीं जानता, क्योंकि जो मैं चाहता हूँ, वह नहीं किया करता, परन्तु जिस से मुझे घृणा आती है, वही करता हूँ।** फिर इच्छा है। लेकिन नफरत करते हैं। इस वजह से पाप मुझ में बसता है। इसका वर्णन हम निम्नलिखित वाक्य में करते हैं। ये काम करें ये काम न करें हम वचन से जानते हैं कि मुझे वैसा ही जीना है जैसा मैं करता हूँ। तो यह बहुत आसान है। परमेश्वर की आत्मा हमारे साथ बातचीत करती है, हम निर्णय लेते हैं। मैं परमेश्वर के साथ एक रिश्ते में रहना चाहता हूँ। प्रार्थना। पांच मिनट की प्रार्थना पर्याप्त नहीं है। मुझे परमेश्वर के साथ अधिक समय बिताने की जरूरत है। लेकिन फिर व्यावहारिक जीवन में हम ऐसा नहीं कर पाते। पिछले जीवन के अंत की बैठकों में लोग क्या निर्णय लेते हैं? लेकिन यह कब तक चलता है? क्योंकि शरीर हमें इससे मुक्ति नहीं है। रोमियों अध्याय 7 का वाक्य 16 कहता है: **और यदि, जो मैं नहीं चाहता वही करता हूँ, तो मैं मान लेता हूँ, कि व्यवस्था भली है।** सत्रहवाँ श्लोक **तो ऐसी दशा में उसका करने वाला मैं नहीं, वरन पाप है, जो मुझ में बसा हुआ है।** तो यह वह रहस्योद्घाटन है जो उसे मिला। यह एक महान रहस्योद्घाटन है। यानी मैं वही करता हूँ जिससे मुझे नफरत है, न कि जो मैं चाहता हूँ। ऐसा करने वाला मैं नहीं, वरन पाप मुझ में वास करता है। पाप में इतनी शक्ति है। वचन में जीना एक

महत्वपूर्ण बिंदु है। परमेश्वर ने अदन की वाटिका को इतना सुन्दर बनाया। सब उजाड़ और उजाड़ भूमि को सुशोभित करने और उनमें रहने के लिए, इसे पृथ्वी पर निवास करने के लिए बनाया गया था। लेकिन केवल वे ही परमेश्वर के साथ नहीं हैं। एक सामूहिक। इसलिए ईडन मिट्टी के इस क्षेत्र में इसका विशेष स्थान था। वहाँ, जब मनुष्य को परमेश्वर के स्वरूप और समानता में बनाया जाता है, तो उसका प्राथमिक उद्देश्य परमेश्वर और मनुष्य के साथ संगति की तलाश करना होता है। यह मेरे लिए बहुत अच्छी प्रकाशन है। जिस परम उद्देश्य के लिए सर्वशक्तिमान परमेश्वर ने हमें बनाया है, वह है हमारे साथ संगति बनाए रखना। शैतान ने हमें धोखा दिया लेकिन परमेश्वर ने आदम से सातवां हनोक प्राप्त किया। इस प्रकार परमेश्वर को मिला समर्पण का जीवन हनोक परमेश्वर के साथ-साथ चला। ऐसा लिखा है, लेकिन अगर हम इसके बारे में फिर से सोचें परमेश्वर हनोक के साथ है। जब हनोक परमेश्वर के साथ चलता है, तो यह परमेश्वर की योजना है उससे पहले भी, परमेश्वर की इच्छा मनुष्य के साथ संगति और संगति की थी। परमेश्वर हनोक के साथ है। परमेश्वर चाहता है। हम इसे नूह के जीवन में भी देखते हैं। हमारे अस्तित्व के लिए एक बड़ी परियोजना क्यों हम यहाँ इसलिए हैं क्योंकि नूह ने उस दिन सन्दूक का निर्माण किया था। अन्यथा हमारे पास इस उद्धार की महिमा और आनंद में आने का कोई मौका नहीं है। क्योंकि उसी श्रृंखला से प्रभु यीशु का जन्म हुआ था। हमारे परमेश्वर ने हमें जो काम सौंपे हैं, वे इतने ऊंचे हैं। अगर हम करते हैं, तो यह हमारा कर्म नहीं, हमारी इच्छा नहीं है, यह कोई ऐसा कार्य नहीं है जिसे परमेश्वर हमारे निर्णयों को सौंपता है। यह कुछ ऐसा होगा जो हमेशा के लिए रहेगा। यानी यह एक ऐसी क्रिया होगी जो अनंत काल तक चलती है। इतने समय के बाद भी, जब हम अनंत काल में जाते हैं, तो हम अपने सभी कार्यों को देखेंगे यदि यह ईश्वर प्रदत्त है। उस समय भी ऐसी गतिविधियाँ होनी चाहिए जो परमेश्वर के राज्य के लिए लाभदायक हों। तब हमारे पास वह महान दृष्टि होनी चाहिए। फिर नए नियम में परमेश्वर, पिता और पुत्र का पवित्र आत्मा हम में वास करता है। हम में बसना चाहता है। यदि तुम सर्वदा अपने साथ रहने की मेरी आज्ञाओं को मानोगे, तो पिता उस से प्रेम रखता है। पिता और मैं आकर उन में वास करेंगे जो ऐसे हैं। यह एक आज्ञा है यहीवा ने हमें आज्ञा दी है जब हम आज्ञाकारिता में रहते हैं तो हम उस निवास में प्रवेश करते हैं। या पिता और पुत्र और पवित्र आत्मा हम में निवास करते हैं, हम मसीह में रहते हैं, और मसीह पिता में रहता है। यह इसका आदेश है। यदि हम मसीह में हैं, तो हम पिता में हैं, क्योंकि मसीह पिता में है। सबसे पहले, यूहन्ना दसवें अध्याय के तीसवें पद में कहता है। मेरे पिता और मैं एक हैं। लेकिन आज्ञा का पालन करना इसका आधार है। यदि उन्होंने

अदन में आज्ञा का पालन किया होता, तो वे वहीं रहते। लेकिन जब आज्ञा तोड़ी गई तो वह बगीचे से बाहर था। प्रभु यीशु ने आज्ञा का पालन किया। जब हम क्रूस पर मृत्यु के बिंदु के प्रति आज्ञाकारी बने तो प्रभु हमें वह लौटा देंगे जो हमने खो दिया था। यदि हमें इसे जारी रखना है, तो हमें प्रभु की आज्ञा का पालन करना होगा। आज्ञाकारिता परमेश्वर के राज्य में रहने की पहली शर्त है आज्ञाकारिता क्या है? परमेश्वर की आज्ञा लेकिन जब हम पाप से निपटते हैं तो हम वहीं आते हैं। जब हमारे हव्वा और आदम जोड़े ने पाप के साथ संभोग किया था मुझे नहीं पता कि उन्होंने इसे कितना समझा। मुझे विश्वास नहीं है कि यह समझ में आता है। लेकिन प्रेरित प्रकट करता है रिश्ते से खत्म नहीं हुआ वो गुनाह वह पाप हमारे भीतर वास करता है। यह एक ऐसी अवस्था बन गई है जिसमें सारी मानवता निवास करती है। इसलिए हम अच्छे काम करना चाहते हैं परन्तु जो बुराई हम नहीं चाहते वह हमारे भीतर से आती है। लेकिन इस दौरान ऐसा भी नहीं होता है सामान्य रूप में हम अपनी मर्जी से जीते हैं। फिर रोमियों के सातवें अध्याय का अठारहवाँ पद पढ़िए **क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते।** तब भलाई हमारे शरीर में वास नहीं करती। अर्थात्, आदम और हव्वा में अच्छाई वास नहीं करती। वह ऐसे अच्छे काम करता है जिन्हें हम याद रखेंगे। बहुत से लोगों की मदद करता है। जैसा कि मैं हमेशा कहता हूँ, इसके सभी अन्य उद्देश्य और स्वार्थ हैं। आप देख सकते हैं कि सज्जन अचानक फट गए और यह सब नकली है। यह मसीह में है कि हम इन सभी गुणों को प्राप्त करते हैं। यही असली बात है। दूसरे में पाप का स्पर्श हर जगह है। क्योंकि यह पुराना आदमी पूरी तरह से पाप में है। आत्मा-मनुष्य मर गया और फिर उस आत्मा के दायरे में मन का क्षेत्र, बुद्धि का क्षेत्र, इंद्रियों का क्षेत्र सब पाप का क्षेत्र बन गया। मन दुष्ट हो गया है, मन व्यर्थ हो गया है, मन अन्धा मन हो गया है, पाप में यही हुआ, जब मन परमेश्वर से दूर चला गया। हमारे लिए बहुत अच्छा दिन है। रोमियों अध्याय सात का सत्रहवाँ वाक्य पढ़ते समय **तो ऐसी दशा में उसका करने वाला मैं नहीं, वरन पाप है, जो मुझ में बसा हुआ है।** क्योंकि मैं जानता हूँ, कि मुझ में अर्थात् मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती, इच्छा तो मुझ में है, परन्तु भले काम मुझ से बन नहीं पड़ते। **क्योंकि जिस अच्छे काम की मैं इच्छा करता हूँ, वह तो नहीं करता, परन्तु जिस बुराई की इच्छा नहीं करता वही किया करता हूँ। परन्तु यदि मैं वही करता हूँ, जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है।** तो इस श्लोक में प्रेरित यहाँ जो कह रहे हैं वह एक महान आध्यात्मिक सिद्धांत है। **परन्तु यदि मैं वही करता हूँ,**

जिस की इच्छा नहीं करता, तो उसका करने वाला मैं न रहा, परन्तु पाप जो मुझ में बसा हुआ है। तो इसका दूसरा पहलू यह है कि यदि जीवन के आत्मा की व्यवस्था एक व्यक्ति में वास करती है, तो यह वास्तविकता है कि मसीह हम में वास करता है। यूहन्ना पंद्रहवें अध्याय का सातवाँ पद कहता है। **यदि तुम मुझ में बने रहो, और मेरी बातें तुम में बनी रहें तो जो चाहो मांगो और वह तुम्हारे लिये हो जाएगा।** सच्चाई यह है कि मसीह हम में वास करता है, इसका अर्थ है कि वचन को जीवन की आत्मा के दस्तावेज के रूप में हमारे भीतर वास करना चाहिए। एक सिद्धांत है कि जब पाप रहता है तो हम वह नहीं करते जो हम नहीं करना चाहते तो आइए हम इसके आदर्श सिद्धांत पर आते हैं। अर्थात्, यदि जीवन के आत्मा का सिद्धांत हम में वास करता है, तो हम ऐसा कह सकते हैं मैं जो भले काम करता हूँ, वे यहोवा के लिए हैं मैं नहीं उस जीवन का वचन जो मुझ में वास करता है। कितने लोगों ने इसे समझा? हमें उस जीवन में जाना है। बाकी सब तो हमारे द्वारा किया जाता है। अच्छे कर्म और अन्य कर्म सभी हमारे द्वारा किए जाते हैं। वह इस तरह से बुराई कर रहा है और इसके बीच में कुछ अच्छी चीजें अच्छी लगती हैं लेकिन उन सभी का मकसद कुछ और होता है। परन्तु जीवन के आत्मा की व्यवस्था हम में वास कर गई, और परमेश्वर की इच्छा जानकर परमेश्वर ने दी; जब वह पूर्वनिर्धारित क्रिया हमारे द्वारा आती है, वह जीवन, वह व्यक्ति, वह आत्मिक मनुष्य कहता है कि ऐसा करने वाला मैं नहीं, परन्तु उस जीवन का वचन है जो मुझ में वास करता है, जो मुझ में यह काम करता है। उस जीवन का वचन जो मुझ में वास करता है, मैं केवल एक भवन हूँ: सत्य की आत्मा जो मुझ में वास करती है, यह कार्य जीवन के वचन द्वारा किया जाता है यह हमें प्रभु के जीवन के बारे में बताता है। जॉन के सुसमाचार के चौदहवें अध्याय का दसवाँ छंद **क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।** जो वचन मैं तुझ से कहता हूँ, वह उस पर है मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में। इस अध्याय में ही वह क्षेत्र जहाँ पिता और पुत्र हम में निवास करते हैं, जबकि सत्य की आत्मा हमारे जीवन में हम में निवास करती है, हमें एक सच्चाई बताती है। ऐसे प्रिय जन मसीह में और पिता मसीह में हैं: यह महान आज्ञाकारिता है। फिर यहाँ **क्या तू प्रतीति नहीं करता, कि मैं पिता में हूँ, और पिता मुझ में हैं? ये बातें जो मैं तुम से कहता हूँ, अपनी ओर से नहीं कहता, परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।** परमेश्वर का पुत्र मनुष्य के पुत्र के रूप में आया और हमारे लिए एक उदाहरण प्रस्तुत किया। है बेटा मैं आपको यह नहीं बता रहा हूँ कि मैं आपको और उसे यहां ले गया मैं यहां वहां से लेकर नहीं बोल

रहा हूं या कि मैंने बैठकर बहुत सारे नोट्स लिखे। जब मैं यह शब्द कहता हूं, तो यह अपने आप नहीं है। यूहन्ना अध्याय चौदह के दसवें पद के अंत को पढ़ते समय **परन्तु पिता मुझ में रहकर अपने काम करता है।** तो किसने किया? वह काम तब हुआ जब यीशु मसीह धरती पर आया यह कैसे हुआ? हम जानते हैं कि वह आत्मा की परिपूर्णता में आत्मा की आज्ञाकारिता में रहता है। आत्मा यीशु मसीह को जंगल में ले जाती है। जब उन्होंने वहां वह शब्द बोला मत्ती के चौथे अध्याय का चौथा वाक्य **उस ने उत्तर दिया; कि लिखा है कि मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एक वचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है जीवित रहेगा।** यह अपने आप में एक शब्द नहीं है वचन आत्मा में निकला, और आत्मा उसमें वास किया। यही उस शक्ति का रहस्य है। जब यीशु ने अपनी सेवकाई में चमत्कार किए मत्ती बारहवें अध्याय के अट्ठाईसवें पद में कहते हैं। **पर यदि मैं परमेश्वर के आत्मा की सहायता से दुष्टात्माओं को निकालता हूं, तो परमेश्वर का राज्य तुम्हारे पास आ पहुंचा है।** जैसा कि हमारे शास्त्री कहते हैं, यह शास्त्री और फरीसी या लोगों का कोई समूह जो वचन को सुनते हैं। वह अधिकार और शक्ति के साथ शब्द की घोषणा करता है (Mathew 7 : 28,29) हमें इसका रहस्य दिखा रहे हैं यहीं पर स्वर्ग का राज्य पृथ्वी पर प्रकट होता है जब पिता का आत्मा उसके भीतर वास करता है और आत्मा को अपना सब कुछ देता है, यहां तक कि उसके भीतर के शरीर के दायरे को भी छुए बिना। शरीर के जरा भी स्पर्श के बिना स्वर्गीय रूप से बहना। तो यह एक महान दस्तावेज है। अर्थात्, जब परमेश्वर का वचन परमेश्वर की आत्मा के द्वारा हमारे भीतर वास करता है और उसके अधीन होता है, जब हम आत्मा के अधीन होते हैं आत्मा या परमेश्वर की आत्मा के द्वारा वह पूरा करेगा जो वह इस पृथ्वी पर हमारे साथ करना चाहता है। इसमें इंसानियत की जरा सी भी झलक नहीं है यह सब आध्यात्मिक होगा, और यह सब स्वर्गीय होगा। केवल ऐसे मंत्रालयों में यह सांसारिक मनुष्य करता है, यह देहधारी मनुष्य ही उसे स्वर्ग के मार्ग पर ले जा सकता है। उस मंत्रालय की आज और हर समय जरूरत है। आइए इसे विश्वास से लें। रोमियों अध्याय 7 का वाक्य 21 कहता है: **सो मैं यह व्यवस्था पाता हूं, कि जब भलाई करने की इच्छा करता हूं, तो बुराई मेरे पास आती है।** यह एक दस्तावेज है। हम व्यवस्था या व्यवस्था को आत्मा के बिना देखते हैं, यह पुस्तक और पत्थर में लिखा हुआ है। यह हमारे भीतर नहीं है, इसलिए कहा जाता है कि इसमें कोई जीवन नहीं है। दस्तावेज़ में जान है लेकिन किताब में पड़ी है, कागज़ पर पड़ी है, पत्थर पर पड़ी है, उसमें जान नहीं है जीवन आत्मा में है। यूहन्ना छठे अध्याय के छियासठवें वाक्य में कहते हैं। **आत्मा तो जीवनदायक है, शरीर से कुछ लाभ नहीं: जो बातें मैं ने तुम से कहीं हैं**

वे आत्मा है, और जीवन भी हैं। यहाँ बुराई का सिद्धांत पाप का सिद्धांत है। जैसा कि हम वहाँ वाक्य रहे हैं, मैं इसके विवरण में नहीं जाऊंगा। फ़िलहाल आइए देखें कि पाप की व्यवस्था क्या है। रोमियों अध्याय सात के बाईस और तेईस पद पढ़ते समय क्योंकि मैं भीतरी मनुष्यत्व से तो परमेश्वर की व्यवस्था से बहुत प्रसन्न रहता हूँ। परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। फिर बुद्धि का व्यवस्था पत्थर में लिखा व्यवस्था, वह नियम है जो बाहर है। यहां बुद्धि का सिद्धांत यह है कि यह आंतरिक सिद्धांत है या अंतरात्मा रोमियों की पुस्तक दूसरे अध्याय में प्रकट होती है। मन, साक्षी। रोमियों की पत्री दूसरा का चौदह और पन्द्रह हुआ पद **फिर जब अन्यजाति लोग जिन के पास व्यवस्था नहीं, स्वभाव ही से व्यवस्था की बातों पर चलते हैं, तो व्यवस्था उन के पास न होने पर भी वे अपने लिये आप ही व्यवस्था हैं। वे व्यवस्था की बातें अपने अपने हृदयों में लिखी हुई दिखते हैं और उन के विवेक भी गवाही देते हैं, और उन की चिन्ताएं परस्पर दोष लगाती, या उन्हें निर्दोष ठहराती है।** उनके विवेक के साथ गवाह। विवेक - मन में गवाही तब हमारी आत्माओं में यह निश्चित रूप से उत्पत्ति दूसरा का सात में देखा जाता है कि मनुष्य एक जीवित आत्मा बन गया जब पवित्र परमेश्वर ने अपनी नाक के माध्यम से जीवन की सांस फूँकी। मन आत्मा में है। तब हमारे भीतर सही गलत को जानने की क्षमता होती है। दूसरी ओर जब अच्छे और बुरे के ज्ञान का वृक्ष फलता है, तो हमारे भीतर उस परिमाण का एक अच्छा क्षेत्र भी होता है। उनके बीच एक महान युद्ध चल रहा है, यह पाप की व्यवस्था है। जब हम अच्छाई और बुराई का ज्ञान कहते हैं, तो हमें याद आता है कि अच्छाई और बुराई नहीं है। यह अच्छा और बुरा है जिसे दूसरे दस्तावेज़ से आंका जाता है। यह परमेश्वर के वचन के माध्यम से है कि हमें वास्तव में अच्छे और बुरे को समझने की आवश्यकता है। कुछ लोगों को यह बिल्कुल भी समझ में नहीं आता है। यह परमेश्वर के वचन के माध्यम से है कि हमें अच्छे और बुरे की रचना करनी चाहिए, या फिर भेदभाव से जानने की जरूरत है। लेकिन भले और बुरे के बारे में ज्ञान के उस क्षेत्र में भी, इसे समझने की क्षमता है। लेकिन यह परमेश्वर के वचन से सहमत नहीं है। अगर हम आज दुनिया को देखें, तो परमेश्वर के बच्चे भी परमेश्वर के वचन में एक बात कहने के विरोध में हैं। यह सही नहीं है। क्यों? एक और दस्तावेज़ उनके भीतर है। यह पाप की व्यवस्था है, वे चीजों को पाप की व्यवस्था के द्वारा देखते हैं। परमेश्वर का एक मनुष्य संसार की वर्तमान व्यवस्था को तब देखता है जब वे पृथ्वी पर हैं किसी ऐसे व्यक्ति को देखना भी अलग है जो शारीरिक अध्यात्मवादी होने का दावा करता

है। लेकिन जाति इन सब से अलग है। क्योंकि यह किसी अन्य दस्तावेज़ से है, पाप के व्यवस्था से वे अच्छे और बुरे में भेद करते हैं। अगर हम आज इसे देखें तो यह बढ़ रहा है। प्रगतिशील मीडिया पर नजर डालें तो जब हम इसमें प्रगतिशील के विचारों को देखते हैं वे उन चीजों को अच्छी तरह देखते हैं जो परमेश्वर के वचन के विपरीत हैं। अंधकार को दिन और दिन को अंधकार के रूप में देखा जाता है। यह ज्ञान के इस वृक्ष से निकला है। लेकिन हर किसी के अंदर सही ओर गलत जानने का एक दायरा होता है। यह परमेश्वर की श्वास से ली गई है। यही अंतरात्मा हमें यहाँ बताती है। रोमियों की पत्री के सातवें अध्याय में लिखा है कि ज्ञान का एक नियम है। अंग्रेजी में Law of the mind ऐसा लिखा है। मन का दस्तावेज़। यह सभी में मौजूद है। पृथ्वी पर जन्म लेने वाले प्रत्येक व्यक्ति के पास बुद्धि का एक ही सिद्धांत होता है। तो यहाँ जो प्रेरित हमें बताना चाहता है वह यह है कि यह मन की व्यवस्था है, पाप की नहीं, परन्तु परमेश्वर की आत्मा की। लेकिन जैसा कि मैंने पहले कहा, ज्ञान का वृक्ष, ज्ञान का एक सिद्धांत भी है। यह पाप से प्राप्त किया हुआ एक दस्तावेज़ है। लेकिन अभी हम जो सोच रहे हैं वह इस बुद्धि के दस्तावेज़ में है। रोमियों की पत्री तेईसवाँ वाक्य अध्याय सात परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। व्यवस्था, बुद्धि का दस्तावेज़ पाप का नियम ऊपर ईविल नामक एक दस्तावेज़ लिखा है। क्या यही बुराई का सिद्धांत है? पाप के कानून के लिए बंदी आपको बस इतना करना है कि डॉक्ट्रिन ऑफ सिन नामक एक दस्तावेज़ लिखना है, जो यहां तक जाता है। फिर यह उनके बीच युद्ध है। यानी यह युद्ध उसके भीतर है जो नैतिक स्तर से जीता है। जब आप कोई गलती करते हैं, तो आप अचानक दोषी महसूस करते हैं वह जानता है कि वह जो कर रहा है वह गलत है। लेकिन ऐसा नहीं है यानी एक ऐसा समूह जिसने परमेश्वर के वचन को कोई मूल्य नहीं दिया है। जब उनके भीतर एक सीमा पार हो जाती है तो यह अपराधबोध गायब हो जाता है। तब वे एक कठिन, निराश मन में आते हैं। हम जानते हैं कि अगर हम एक बात दोहराते हैं जब हम पहली बार जानते हैं कि यह पाप है, तो हमें डर लगता है, एक दोष है, लेकिन जब हम इसे बार-बार करते हैं, तो यह खो जाता है। क्योंकि हमारे दिमाग का वह एक क्षेत्र कठिन होता है। तब हम उस पाप को आसान कर देते हैं। यह हमें कुछ भी नहीं याद दिलाता है यह एक बहुत ही खतरनाक क्षेत्र है। इब्रानियों की पुस्तक के दसवें अध्याय में यही स्थिति है। इब्रानियों के लिए पत्री के दसवें अध्याय का छब्बीसवाँ पद **क्योंकि सच्चाई की पहिचान प्राप्त करने के बाद यदि हम जान बूझ कर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान**

बाकी नहीं। यह बहुत खतरनाक है। ऐसे बहुत से पाप आज उन लोगों द्वारा किए जा रहे हैं जो खुद को ईश्वर की संतान होने का दावा करते हैं। उदाहरण : हमारा जीभ, जीभ पर कोई नियंत्रण नहीं है। अब हमारे पास वह दोष नहीं है। परमेश्वर का वचन कहता है कि किसी व्यक्ति का न्याय करना एक महान पाप है, जब प्रभु आज हमें सलाह देते हैं, सामान्य तौर पर, हममें से कोई भी उस अपराध बोध को महसूस नहीं करता है। आप जहां भी जाते हैं एक इनकार [negative] बातचीत सबसे ज्यादा सुनी जाती है। वह बहुत ही खतरनाक इलाका है। क्योंकि जब हम Negative शब्द बोलते हैं तो उस माहौल में नेगेटिव स्पिरिट आती है [Negative spirit] वहाँ परमेश्वर का आत्मा काम नहीं कर सका। अब अगर आप मीटिंग शुरू करने से पहले थोड़ी देर बैठते हैं और कबूल करते हैं या नही 'Negative talk' यानी पहले से ही नकारात्मकता की भावना [Negative spirit] पूर्ण। फिर जब वे सब मिलकर प्रार्थना करने बैठेंगे, तो परमेश्वर का आत्मा वहां काम नहीं कर सकेगा। यह हमारी सामान्य विफलता है। अपवाद इन दिनों पहले से ही बहुत दुर्लभ हैं। क्योंकि हमारा पूरा मीडिया फेल होने का माध्यम बनकर चला गया है। कोई सकारात्मक खबर नहीं है। इस प्रकार हम एक शत्रुतापूर्ण व्यक्तित्व बन जाते हैं। इसलिए जब मैं नेगेटिव कहता हूँ टीवी देखें और इंटरनेट पर नजर डालें तो अब Whatsapp का सारे मैसेज [Message] आगे-पीछे भेज रहा है। मुझे ऐसा नहीं लगता कि जितने भी मैसेज आते हैं वे Positive मैसेज होते हैं। सब मन लगाकर पढ़ते हैं। जब आप इसे पढ़ते हैं, तो यह पढ़ने लायक होता है। यह बाइबल पढ़ने जैसा नहीं है। जितनी जल्दी हो सके बाइबल पढ़नी चाहिए। दूसरा ऐसा नहीं है इसलिए हम इसे शामिल करते हैं। हम इसका आनंद लेते हैं। हमें व्यवस्था का आनंद लेना चाहिए। लेकिन हम दूसरे का आनंद लेते हैं। मुझे उम्मीद है कि यह कल वापस आ रहा है। फिर हमें सोचना होगा कि हम नकारात्मक क्षेत्र में रह रहे हैं या नहीं। क्या हमारे घर का माहौल नकारात्मक है? हमेशा अपराध बोध होता है, सब कुछ अपराध बोध है। यह नकारात्मक है। पत्नी को वह पसंद नहीं जो पति करता है और पत्नी को वह पसंद नहीं है जो पति करता है। कई घरों में दिल से बात नहीं होती। अब बच्चों के साथ भी ऐसा ही है। कुछ बच्चों को कुछ जगहों पर देखना बहुत [Righteous] न्याय जैसा लग सकता है। माता-पिता का विरोध करने वाली कोई न्याय [Righteous] आत्मा नहीं है। [Rebellious Spirit]। जब माता-पिता कहते हैं कि कुछ गलत है, तो बच्चे कहेंगे, 'आप किस बारे में बात कर रहे हैं?' कहते हैं। बच्चों को अपने पिता और माता का सामना करने का मौका दिया गया, न कि केवल इसलिए कि वे धर्मी थे। ऐसा लगता है जब मैं कहीं जाता हूँ। तो अगर आत्मा को काम करना है, तो हमें वह क्षेत्र

बनना होगा जिसमें आत्मा को काम करना है। अगर [Negative] विपत्ति है, अगर एकता नहीं है, अगर इच्छा नहीं है वहाँ परमेश्वर की आत्मा काम नहीं कर सकती। रोमियों का तेईसवाँ पद अध्याय सात **परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है।** यह हमारी समस्या है। हमारे अंगों में एक और दस्तावेज है। यह हमारी जुबान पर है। इसलिए [Negative] इसके खिलाफ बोलता है। जुबान पर आने से पहले आंख और कान में आ जाता है। आंख देखती है और अंदर चली जाती है। कान सुनता है और अंदर चला जाता है। इस प्रकार हमारे दिमाग में संग्रहीत जानकारी सूचना का आधार बन जाती है। यदि किसी समाचार को कागज पर छापना है तो एक समाचार अवश्य प्राप्त होना चाहिए। अगर हम उस जगह पर जाएँ जहाँ खबर छपती है, वहाँ एक निर्माता होगा। वही समाचार बनाता है। वह कहाँ से आता है? हम जानते हैं दुनिया में बहुत सारे समाचार मीडिया हैं वे उन मीडिया में गर्म समाचारों को देखेंगे। या उनके पास ऐसे लोग हो सकते हैं जो उन्हें खबर देते हैं। जब वे इसे निर्माता को देते हैं तो कलेक्ट करने वाला व्यक्ति इसे इकट्ठा करता है और वह खबर बनाता है। वे इसे प्रिंट करते हैं या कोई और इसे पढ़ता है। यह एक प्रिंटिंग प्रेस पर छपा होता है, लेकिन हम नहीं जानते कि प्राप्त जानकारी एक माध्यम है या नहीं। तो हम इसे कहाँ प्राप्त करते हैं? वह यहां जो देखता और सुनता है वह हमारे अंदर चला जाता है। एक प्रिंटिंग प्रेस [प्रिंटिंग प्रेस] है। 'दिमाग'। यह हमारे अंदर इस तरह काम कर रहा है। फिर इसे अच्छी तरह से किया जाता है और जब समय आता है तो जीभ इसे बाहर निकालती है। इसका सकारात्मक पहलू भजन संहिता उनतीस के दूसरे पद में लिखा गया है। **मैं बिना बोले गुंगा बैठ गया।** लेकिन यहां उन्हें स्वर्ग के रूप में देखा जाता है। स्वर्गीय उसके पास आता है। तभी वह कहता है **मैं अपनी जुबान से बोला।** यह दुनिया नहीं बोलती है, यह स्वर्गीय है जो बोलता है। भीतर निहित सभी जानकारी स्वर्गीय होनी चाहिए। जब हम प्रार्थना में होते हैं, तो हमें अपने भीतर के स्वर्ग को ग्रहण करना चाहिए। हमें कौन देता है? सत्य की आत्मा का भण्डारी। फिर हम देखते हैं कि हमें क्या चाहिए। यानी प्रेरित वही कहते हैं जो वे देखते और सुनते हैं। यीशु कहते हैं मैं घोषणा करता हूँ कि मैं स्वर्गीय हूँ और मैं देखता और सुनता हूँ। तब यीशु ने स्वर्गीय क्षेत्र में बात की। जो कुछ उसने वहाँ देखा और जो कुछ वहाँ सुना वह उसकी जुबान से निकला। तो हमारा जीवन ऐसा ही होना चाहिए। इसलिए हमें नकारात्मक बातचीत को छोड़ना होगा। नकारात्मक पढ़ना बंद करो। मुझे नहीं पता कि इसके साथ क्या करना है। क्योंकि परमेश्वर के सब सेवक उसके बीच में रखे जाएंगे।

Whatsapp पर अगर कोई बड़ी खबर आती है तो आप उसे बदल दें। क्योंकि अब हम इसे नियंत्रित नहीं कर सकते। यह सब हमारे नियंत्रण में है। चलो कुछ को ब्लॉक करते हैं। कुछ को नियंत्रित करते हैं। लेकिन कुछ नियंत्रण से बाहर हैं। यह हमारे नियंत्रण में नहीं है। तब हमारे मन के दायरे में एक दस्तावेज होता है। मन के उस क्षेत्र में ही सही ज्ञान हो सकता है। परमेश्वर के वचन से लेकर आत्मा और संगति तक हमारी एक समान संगति होनी चाहिए -जिस क्षेत्र में हमारा मन नवीनीकृत और रूपांतरित होता है, उस स्तर पर हमें अपने मन को रखना होता है। इसलिए मन को भरना चाहिए। तभी हम प्रभु के दूत बन सकते हैं। हमें याद रखना चाहिए कि हम स्वर्ग के मुद्रक हैं। हम स्वर्ग के समाचार पत्र हैं। प्रेरित हमें कुरिन्थियों को लिखे पत्र में यह दिखाता है। आप शब्द द्वारा लिखे गए समाचार पत्र हैं। आप समाचार पत्र होंगे जिन्होंने शब्द लिखा था। फिलिप्पियों अध्याय 4, पद 8 पढ़िए। **निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।** यहां कुछ भी विरोधाभासी नहीं कहा गया है। सच तो यह है कि परमेश्वर का वचन धर्मी है। अनंत महिमा को तब देखना चाहिए जब इसे भारी कहा जाता है। प्रेरित अनंत महिमा के क्षेत्र के रूप में दृढ़ता की बात करता है। क्या सब धार्मिकता और धर्म का वचन शुद्ध नहीं है? जिस चीज की जरूरत न हो उस पर न चढ़ें। वह सब कुछ जो शुद्ध है और वह सब जो सुखद है। फिर अगर हमें कुछ भी नकारात्मक मिलता है, तो हम अपना सुधार खो देंगे। मिलाप ' एक अच्छा शब्द है। अगर हमें भाइयों और बहनों के रूप में मेल-मिलाप करना है, तो हमें संगति से सोचना चाहिए। नहीं तो भाइयों के गुनाह के बारे में सोचेंगे तो दिक्कत होगी। तभी 'अभी' शब्द चलन में आता है। कोई दो या तीन अच्छी बातें कहेगा और फिर चार जो कुछ प्रतिष्ठित है वह यह है कि [प्रतिष्ठा] इन दिनों पूरी तरह से विरोधाभासी है। आज प्रतिष्ठा कहीं नहीं मिलती। जब मैं कभी-कभी समाचार देखता हूं, तो यह सभी नकारात्मक शब्द होते हैं। अच्छी बात मत देखो, किसी गुण या स्तुति के बारे में सोचो, वह है मन का परिवर्तन। तब उसे परमेश्वर के सामने अधिक समय तक रहना होगा। इसके अलावा, हमें परमेश्वर के बच्चों के साथ अच्छी संगति रखनी चाहिए, जो हमेशा आध्यात्मिक क्षेत्र के बारे में सोचते रहते हैं। अगर यह राजनीति वाला चर्च है, तो हमें वह विचार मिलेगा। अगर दुनिया एक बात करने वाला समूह है तो हम अनजाने में उस एक विचार पर जाएंगे। क्योंकि बहुत सारा ज्ञान हमारे अंदर प्रवेश करता है। आइए हम उस पद पर लौटते हैं जिसे हम पढ़ते हैं। रोमियों की पत्री सातवाँ अध्याय

तेईसवाँ वाक्य अध्याय सात परन्तु मुझे अपने अंगों में दूसरे प्रकार की व्यवस्था दिखाई पड़ती है, जो मेरी बुद्धि की व्यवस्था से लड़ती है, और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। इसलिए हमें इन नकारात्मक चीजों में दिलचस्पी है क्योंकि हमारे शरीर के अंगों में पाप का विधान है। और जैसा कि आप नीचे पढ़ रहे हैं और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। तब पाप की व्यवस्था हमारे भीतर है। और मुझे पाप की व्यवस्था के बन्धन में डालती है जो मेरे अंगों में है। बंधन का अर्थ है गुलाम। पाप अब आपके नश्वर शरीर में अपनी वासनाओं का पालन करने के लिए शासन नहीं करता है। वासना आखिरकार हमें बंदी बना रही है। हमें बस इसे प्राप्त करना होगा। वो चाहत हमें एक अलग दिशा में ले जा रही है [दिशा], यह हमें गुलाम बना रहा है। परमेश्वर का वचन सही नहीं है लेकिन हम गुलाम हैं। पाप की व्यवस्था का दास। रोमियों के सातवें अध्याय के चौबीसवें पद में **मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ!** मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा? शरीर मृत्यु के अधीन है। काश, मैं एक दुखी आदमी हूँ मृत्यु का स्रोत पाप है। इसलिए वचन हमें सिखाता है कि हमें पाप के लिए मरना चाहिए। यह मरना कैसे होती है? हम जानते हैं कि क्रूस पर हम ईश्वर के प्रति समर्पण में प्रवेश करते हैं। या हम उस समर्पण को बपतिस्मै के द्वारा इस जीवन में आने के लिए प्रतिबद्ध करते हैं। यह सच है और हमें इसके अनुसार जीना चाहिए। लेकिन अगर हमें इस जीवन में आना है, तो यह केवल आत्मा के द्वारा ही किया जा सकता है। निर्णय हमें कभी जीवन में नहीं लाएगा। कहने का तात्पर्य यह है कि जिन परिस्थितियों में वे निर्णय लिए जाते हैं, वे हमें उन निर्णयों की वास्तविकता में कभी नहीं लाएंगे। इसलिए जब हम उस निर्णय में प्रवेश करते हैं, जब हम पुराना व्यक्ति को दफनाते हैं और मसीह में नए व्यक्ति के रूप में उस समर्पण में आते हैं, तो यह परमेश्वर की आत्मा और परमेश्वर का वचन है जो हमारे लिए इसे संभव बनाता है। तभी हम इस हकीकत तक पहुंच सकते हैं। बाइबल अध्ययन बाइबल पढ़ रहा है लेकिन वह व्यवस्था, अगर हम उस शब्द को जीवित नहीं पाते हैं तो यह एक धोखा है। उस जीवन को सूली पर चढ़ा देना चाहिए। या ऐसी स्थिति जिसमें हम कानून के संबंध में मर जाते हैं, हमारे लिए एक धोखा है। समारोह एक विश्वासघात है। इसे हमें मरना चाहिए। उसी तरह, पाप के अधीन एक शरीर इसके लिए बहुत से आध्यात्मिक कार्य कर सकता है। मीटिंग में आकर शायद जनसभा में गए हों, हो सकता है कि वह सुसमाचार प्रचार में चला गया हो ताकि वह बहुत कुछ कर सके। लेकिन वह शरीर है। तब ऐसा शरीर तभी मर सकता है जब वह मर जाए। तब परमेश्वर केन के बलिदान से प्रसन्न नहीं होगा। जब हम वहाँ उत्पत्ति के चौथे अध्याय

का पाँचवाँ वाक्य पढ़ते हैं **परन्तु कैन और उसकी भेंट को उसने ग्रहण न किया।** वह है। बलिदान बाद में आता है। जो लोग यज्ञ या आध्यात्मिक ग्रह करते हैं, उन्हें उस यज्ञ से लाभ नहीं होता है यदि यह सही नहीं है। जब हम बलिदान के बारे में सोचते हैं, तो तीन मुद्दे होते हैं। आध्यात्मिक ग्रह, बलिदान, याजक एली के दोनों पुत्र वे थे, जिन्होंने बलि की व्यवस्था को रौंदा। वे याजक हैं। हम जानते हैं कि तब उनके साथ क्या हुआ था। तब याजक सही स्तर का होना चाहिए। बलि भी वैसा ही हुआ: इब्राहीम ने चिड़िया को न फाड़ा, वरन भटक गया। गुलामी। फिर कुर्बानी भी जरूरी है। यह स्वच्छ जानवर होना चाहिए। हमारे जीवन **इसलिये हे भाइयों, मैं तुम से परमेश्वर की दया स्मरण दिला कर बिनती करता हूँ, कि अपने शरीरों को जीवित, और पवित्र, और परमेश्वर को भावता हुआ बलिदान करके चढ़ाओ: यही तुम्हारी आत्मिक सेवा है।** जैसा कि हम रोमियों बारह के पहले पद में देखते हैं। शरीर एक घर है। यह वह मंदिर है जहाँ परमेश्वर की आत्मा निवास करती है। इसलिए इसे पवित्रता में रखना है। जैसा कि हमने सीखा है, हमें अपने शरीर के सभी अंगों को धार्मिकता के लिए परमेश्वर को सौंप देना चाहिए। पवित्रता और अलगाव मनाया जाना चाहिए। मंदिर का रहस्य यह है कि यह पहाड़ की चोटी और उसकी सभी सीमाओं पर पवित्र होना चाहिए। न केवल मंदिर का आंतरिक भाग बल्कि मंदिर की सीमाएं भी पवित्र होनी चाहिए। वहां कुछ भी अवैध नहीं है। तब पुजारी उसी स्तर पर रहता है। जब आप एक याजक को देखते हैं तो वह समय और मंदिर से जुड़ा जीवन होता है। जैसा कि हम मंदिर के बारे में पढ़ते हैं हम यहजेकेल की भविष्यवाणी में देखते हैं पुजारी भी उसी इलाके में रहते हैं जहां मंदिर बैठा है। और हारून और उसके पुत्रा, और लेवीय, मिलापवाले तम्बू के चारों ओर याजक थे। तब भी वे परमेश्वर की उपस्थिति में रहते हैं। तम्बू भगवान शकीना की उपस्थिति में निरंतर बलिदान का एक क्षेत्र है। पवित्र मंदिर में पूजा होती है और ये चाहने वाले इसके आसपास रहते हैं। तो यह मत भूलो कि एक महान दस्तावेज हमारे खिलाफ है। पाप का नियम यह है कि हमें जितना हो सके इसे जानना चाहिए। लिखा है कि यह शरीर के अंदर रहता है। जीवन की आत्मा का नियम, जो पाप के नियम पर इस हद तक विजय प्राप्त करता है कि वह अपना सिर नहीं उठा सकता। हम जीवन के नियम में तभी जी सकते हैं जब वह हमारे भीतर लिखा हो। क्योंकि हमारे शरीर की पूरी रिकवरी चमक के साथ आती है। तब तक यह शक्ति भीतर है, लेकिन शक्तिहीन कैसे हो सकती है? जिस हद तक वह अपना सिर नहीं उठा सकता, जीवन की आत्मा का सिद्धांत आत्मा की आज्ञाकारिता में चलना है। क्योंकि सत्य का आत्मा हमें दिया गया है। अंदर के आदमी को ताकत से मजबूत करो। हमारा सोल मैन एक अच्छा परफेक्ट मैन होना चाहिए।

हमारा मन मसीह का मन होना चाहिए। इसकी रक्षा की जानी चाहिए क्योंकि हम एक पाप का दुनिया में रहते हैं। सावधान रहें मंदिर से सावधान रहें। हमारी स्वतंत्र इच्छा का क्षेत्र ईश्वर की इच्छा के अनुसार होना चाहिए। यह परमेश्वर के वचन के माध्यम से है कि हम परमेश्वर की इच्छा को समझते हैं। हम अपनी जीवन यात्रा में जो कुछ भी करते हैं वह ईश्वर की इच्छा से होना चाहिए। हमारी भावना का स्तर ईश्वर की इच्छा में होना चाहिए। अर्थात्, वह सब कुछ जो परमेश्वर वास्तव में चाहता है, उस स्तर तक आना चाहिए। हर जगह असफलता ही हाथ लगी। इसी भाव से वासना उत्पन्न होती है। हमारी प्रतिक्रियाएँ और भावनाएँ वह नहीं हैं जिसके लिए हम रोते हैं जैसा कि मैं आमतौर पर कहता हूँ, हम उसके लिए रोते हैं जिसके लिए हम रोते नहीं हैं। ठीक इसके विपरीत कर रहा है। और फिर हम जानते हैं हमारे शरीर के अंगों में पाप की व्यवस्था, यदि इसे दूर करना है, तो केवल जीवन की आत्मा की व्यवस्था के द्वारा ही खाया जा सकता है। प्रचुर मात्रा में जीवन यह इतना सीमित है कि कोई अन्य जीवन इसे नहीं उठा सकता है। जीवन की आत्मा के सिद्धांत में, जब आप उस बहुतायत में होंगे, तो आप पाप के सभी क्षेत्रों तक ही सीमित रहेंगे। जब परमेश्वर के सेवक ने बलि के साथ प्रार्थना की, तो एक बड़ी गड़गड़ाहट हुई। पलिशती की सारी सेना पाप दिखा रही है। लिखा है कि ये सारी ताकतें सिमट कर रह गई हैं। तब शमूएल के समय में कोई युद्ध नहीं हुआ था। रोमियों के सातवें अध्याय के चौबीसवें पद में **मैं कैसा अभागा मनुष्य हूँ! मुझे इस मृत्यु की देह से कौन छुड़ाएगा?** रोमियों की पत्नी अध्याय सात के पच्चीसवें वाक्य में **मैं अपने प्रभु यीशु मसीह के द्वारा परमेश्वर का धन्यवाद करता हूँ:** आपको इसे मेज में रखना है। लेकिन अगली बात यह है कि यह क्रम में नहीं है। आइए अगला भाग पढ़ें। **निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूँ॥** यह मिली-जुली ज़िंदगी है, अभी तक यहाँ आत्मा का दायरा नहीं आया है। यहाँ परमेश्वर के व्यवस्था की सेवा कैसे की जाती है? वहाँ कुछ नैतिक मूल्य लिखे हुए हैं जो कहते हैं कि बुद्धि से बुद्धि होती है, कुछ नियम हैं। विवेक हमारी सुनता है फिर हम उसके आधार पर आराधना करते हैं। नए नियम की आराधना आत्मा और सच्चाई में आराधना है। मन से आराधना नहीं होती। आराधना आत्मा में होती है, भावना के क्षेत्र में नहीं। मानव आत्मा, ईश्वर की आत्मा। सच कहा जाए सत्य की आत्मा जीवन का वचन जो आत्मा हमें देता है। उस वचन के आधार पर परमेश्वर के आत्मा में आराधना परमेश्वर के सामने आती है। यह एक जीवन है, लेकिन यहाँ हम इसे मिश्रित जीवन के रूप में देखते हैं। रोमियों की पत्नी पच्चीसवाँ अध्याय 7 **निदान मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता**

हूँ ॥ क्या इस आकार के परमेश्वर के बच्चों का एक बड़ा समूह है? शायद। परमेश्वर के वचन की आराधना या पढ़ना बौद्धिक पठन है। एक समूह इसके बारे में कुछ नहीं सोचता है। उनके पास दो अध्याय पढ़ने की व्यवस्था है। ऐसा कोई विचार नहीं है कि वह अंदर हो या उसके अनुसार रहना चाहिए। बस एक पढ़ो। फिर जब सारी प्रार्थना पढ़ ली जाती है तो धन्यवाद अदा किया जाता है। मैं परमेश्वर को धन्यवाद करता हूँ। हम बाइबल पढ़ते हैं और प्रार्थना करते हैं कि परमेश्वर को प्रसन्न न करें। जब हम प्रार्थना करते हैं तो परमेश्वर प्रसन्न होते हैं। जो लोग प्रार्थना करते हैं और वचन को ग्रहण किए बिना पढ़ते हैं, उनसे परमेश्वर प्रसन्न नहीं होते हैं। ऐसे नियम हैं जिन्हें परमेश्वर को प्रसन्न करने के लिए निर्धारित किया है उस कानून की सीमा तक आने पर परमेश्वर प्रसन्न होते हैं। इसलिए हम उस क्षेत्र से बौद्धिक रूप से बहुत कुछ करते हैं। अब हम आठवाँ अध्याय में आना है वहां लिखा है एक आत्मीय मनुष्य कैसे जीना है। अगर हम सातवें अध्याय में आते हैं और फंस जाते हैं, तो हम आध्यात्मिक नहीं हैं। परमेश्वर के एक सेवक ने कहा: अधिकांश पेंटेकोस्टल सातवें अध्याय में फंस गए हैं। अभी ऐसा कुछ नहीं कहा जा सकता है। अभी के लिए इतना ही। अब एक बड़ा समूह सातवें अध्याय में भी नहीं आता। मेरा मतलब है कि यह वर्तमान प्रवृत्ति है। यह एक बड़ा प्रश्नचिह्न है कि क्या उन्हें स्पष्ट रूप से उस विश्वास का दोषमुक्ति मिल गया है। मैं यह एक विचार के लिए कह रहा हूँ। हकीकत बुला रहा है। तब यह तब होता है जब हम वचन के महान सत्य, पवित्रता और अलगाव को समझते हैं! यही है जीवन, इसके बिना सीमा टूट जाती है मंदिर भी नहीं, यह एक ऐसा जीवन है जो दुनिया से बहुत जुड़ा हुआ है। फिलहाल यह पता नहीं चल पाया है कि वह पद छोड़ने के बाद क्या करेंगे। लेकिन हमें अपने मंदिर की रक्षा करनी चाहिए। जब हम सब एक साथ बैठे हैं और ध्यान कर रहे हैं तो हमें एक साथ बढ़ने की जरूरत है। जितना अधिक मैं शब्द देता हूँ, उतना ही अधिक मिलता है जब मैं शब्द सिखाता हूँ। क्योंकि परमेश्वर मुझसे कुछ महत्वपूर्ण क्षेत्रों के बारे में बात करेंगे जिससे हम इससे बाहर निकल सकते हैं। जिसके बारे में बोलते हुए मैं खुद को इसके लिए समर्पित कर दूंगा। हमें अनुग्रह के अधीन होना चाहिए। यह श्रेष्ठ जीवन तब प्राप्त होता है जब व्यक्ति अनुग्रह के अधीन होता है न कि व्यवस्था के अधीन। यदि हम अनुग्रह कहकर वासना के कार्य की अनुमति देते हैं, तो यह अनुग्रह की वास्तविकता नहीं है। इसलिए मैं आप बुद्धि से तो परमेश्वर की व्यवस्था का, परन्तु शरीर से पाप की व्यवस्था का सेवन करता हूँ ॥ (रोमियों 7:25) हमें इसके साथ सोचना होगा। हमें अपने आप से पूछना चाहिए: क्या हमें जीवन के आत्मा की व्यवस्था मिली है, कि हम पाप की व्यवस्था पर जय पाएं? क्या हम पाप की व्यवस्था पर जय पाने के लिए आत्मा के अनुसार जीते हैं?

जब आत्मा की आज्ञाकारिता की बात आती है, तो उसे पहले सचेतन स्तर पर आना चाहिए। हमें परमेश्वर के सामने निर्णय लेना चाहिए। जब मैं सुबह प्रार्थना करता हूँ, तो मैं परमेश्वर से कहता हूँ, परमेश्वर, मुझे आत्मा की आज्ञाकारिता में जीने में मदद करें। मैं अपने शरीर के सभी सदस्यों को न्याय के लिए आत्मसमर्पण करता हूँ पापा, मुझमें कुछ भी अन्याय न देखने दें। मुझे कुछ भी अन्यायपूर्ण सुनने, बोलने या अनुकरण करने की अनुमति न दें। मुझे अन्याय के क्षेत्रों में जाने की अनुमति न दें। तुम्हें मुझे परीक्षा में डाले बिना उस दुष्ट से दूर रखना चाहिए। फिर यह सबमिशन होना चाहिए। मेरे दिमाग को बेवजह सोचने मत दो। तब फिलिप्पियों को चौथे अध्याय के आठवें पद के पक्ष में [Positive] कहना चाहिए। **निदान, हे भाइयों, जो जो बातें सत्य हैं, और जो जो बातें आदरणीय हैं, और जो जो बातें उचित हैं, और जो जो बातें पवित्र हैं, और जो जो बातें सुहावनी हैं, और जो जो बातें मनभावनी हैं, निदान, जो जो सदगुण और प्रशंसा की बातें हैं, उन्हीं पर ध्यान लगाया करो।** हे प्रभु, यह सब सोचने में मेरे मन की सहायता करो। इस तरह हम सचेत हो जाते हैं, हमारे शरीर के सभी क्षेत्र हमें परमेश्वर के वचन की आज्ञाकारिता में जीने की चेतना देते हैं। अगर हम इसके बिना जीते हैं, तो हम कभी भी वास्तविकता तक नहीं पहुंच पाएंगे। एक नैतिक मानक है जिसे हम निर्धारित करते हैं। या आज हम जिस कलीसिया को देखते हैं उसका मानक [church] है। आप केवल वहां पहुंच सकते हैं। स्वर्गीय आदेश [स्वर्गीय आदेश] तब होता है जब कोई इसे देखना शुरू करता है ओह! क्या यही परमेश्वर चाहता है? यहीं से भक्तिमय जीवन चलन में आता है। इसके लिए निशाना लगाओ। जैसा कि इब्रानियों बारह के दूसरे पद में कहा गया है हम पूर्णता में यीशु को देखते हैं, विश्वास के अगुवा और खत्म करने वाले। प्रभु यीशु मनुष्य के पुत्र के रूप में आए और पूरी तरह से जीवित रहे। वह पूरी तरह से आज्ञाकारी बन गया और पिता के लिए खुद को बलिदान कर दिया। वहां पूर्णता दिखाई देती है। यीशु के द्वारा हम एक ऐसा जीवन देखते हैं जिसमें मनुष्य वास्तव में सिद्ध है। हमें इसे परमेश्वर के वचन के माध्यम से देखना चाहिए। यहीं पर हम पवित्र आत्मा के अधीन होते हैं। हमें यह पूछने की जरूरत है। मैं यीशु को देखना चाहता हूँ। मैं शुरू से ही यीशु के जीवन को जानना चाहता हूँ, वहीं हम देख रहे हैं। वचन के द्वारा प्रभु यीशु की खोज में यात्रा। उनका जीवन, उनका सिद्धांत, उनकी सेवकाई जो हमारे मन में नहीं है वह है स्वयं को आत्मा में प्रकट करना। यहीं पर हमारा आध्यात्मिक लक्ष्य होता है। यदि हम आज के सामान्य को देखें, तो कोई आध्यात्मिक लक्ष्य नहीं है। उद्धार पाओ, बपतिस्मा लो, और स्वर्ग जाओ। तब मैं दुनिया में आराम से रहना चाहता हूँ। फिर चर्च जाएं। यही सबका लक्ष्य है। परमेश्वर के बच्चे सबसे

ऊपर हैं हमें परमेश्वर की इच्छा को जानना चाहिए। तब यह एक अच्छा आध्यात्मिक ग्रह बनना चाहिए। हारून और उसके पुत्रों और लेवियों ने निवासस्थान का निर्माण किस प्रकार किया। इसे रखना और प्रतिदिन बलिदान करना, उनके माथे पर लिखा है, कि वे यहोवा के लिए सदा पवित्र हैं, याजकीय वस्त्र जो उन्होंने पहने थे, उनका अलगाव। हम एक अलग समूह हैं। परमेश्वर के लिए, यह एक अलग समूह है जो मंदिर में सेवा करता है, वाचा का सन्दूक ले जाता है, और लोगों को आशीर्वाद देता है। आप वाचा का सन्दूक उठाए बिना आशीर्वाद नहीं दे सकते, आप मंदिर में सेवा किए बिना आशीर्वाद नहीं दे सकते। फिर वे उस पवित्र स्थान में उस पवित्र स्थान में कई घंटे बिताते हैं। और याजकों ने अपने कन्धों पर इस्राएलियों के नाम देखे। छह जनजातियाँ। उनके दिल के अंदर नाम फिर से हैं, वे नाम निर्णय पदक पर लिखे गए हैं। कंधे, Judgement Flag। जो लोगों का फैसला लेते हैं यह एक ऐसा समूह है जो लोगों को निर्णय लेने से रोकता है। उन्हें सौंपे गए जीवन के लिए, यदि यह एक परिवार है, तो बच्चों के लिए हमारे लिए, यदि आप चर्च के सेवक हैं, तो वहां आने वालों के लिए उन्हें परमेश्वर के सामने दण्ड में गिरने से बचाना चाहिए। आध्यात्मिक मंत्रालय इतना गंभीर है। परन्तु यदि हम रोमियों की पत्री अध्याय 7 में रहें, तो यह एक अस्तव्यस्त जीवन है। मैं अच्छे काम करना चाहता हूँ लेकिन मैं बुराई में नहीं जीना चाहता। पाप वास करता है, मैं कर्म नहीं करता, पाप मुझ में वास करता है। फिर जब हम कहते हैं 'पाप से नियंत्रण' हम एक ऐसे जीवन में हैं जहां पाप के बंधन में हम पर शासन करता है। हम यह सब ढेर कर रहे हैं हम कुछ नहीं जानते। वचन और कर्म में, दृष्टि में, देखने में और कर्म में पाप है। यह महसूस करना कि हमारे पास भावनात्मक रूप से 'रन आउट गैस' है। यह हम पर प्रगट होना चाहिए। मेरे शरीर के अंगों में पाप की व्यवस्था है वह एक ताकत है जो मेरी बुद्धि के सिद्धांत के खिलाफ लड़ती है। मैं अपनी बुद्धि के सिद्धांत पर खरा नहीं उतर सकता। हमें अपने द्वारा निर्धारित मानकों पर खरा नहीं उतरना है आत्मा का दस्तावेज है। जीवन की आत्मा का सिद्धांत एक आध्यात्मिक जीवन तभी है जब वह उस दस्तावेज़ में आता है और आत्मा की आज्ञाकारिता में रहता है। आइए हम इस अहसास पर आएं कि हम एक ऐसा जीवन जी सकते हैं जो परमेश्वर चाहता है कि हम जीएं, एक ऐसा जीवन जो मसीह का अनुसरण करता है। प्रेरित को पता चलता है कि 'यह असंभव है'। अध्याय छह पूर्ण प्रस्तुत करने के लिए एक जीवन है। यह परमेश्वर की भक्ति का जीवन है। यानी एक प्रभु यीशु जो पाप के लिए मरा और परमेश्वर के लिए जीया। रोमियों की पत्री छठे अध्याय के ग्यारहवें वाक्य में वहाँ प्रेरित हमें सूचित करता है **ऐसे ही तुम भी अपने आप को पाप के लिये तो मरा, परन्तु परमेश्वर के लिये मसीह यीशु में**

जीवित समझो। धार्मिकता के लिए अपने अंग परमेश्वर को समर्पित करें प्यारों। इस वचन का पालन करने के लिए अपने आप को सेवकों के रूप में प्रस्तुत करें। यहां बहुत सी बातें कही गई हैं। फिर यह रोमियों के छठे अध्याय के सत्रहवें और अठारहवें छंदों में कहा गया है यदि आप इस शब्द को गंभीरता से नहीं लेते हैं मैं ईश्वर का धन्यवाद करता हूं कि आपने पूरे दिल से इस सिद्धांत का पालन किया है। जब उन्होंने पूरे मन से उनकी बात मानी तो उन्हें क्या मिला? पाप से मुक्ति रोमियों की पत्री छठे अध्याय के बाईसवें पद में **क्योंकि उन का अन्त तो मृत्यु है परन्तु अब पाप से स्वतंत्र होकर और परमेश्वर के दास बनकर तुम को फल मिला जिस से पवित्रता प्राप्त होती है, और उसका अन्त अनन्त जीवन है।**

आमेन

For Technical Assistance
Amen TV Network
Trivandrum, Kerala
MOB : 999 59 75 980
755 99 75 980
Youtube : amentvnetwork

Contact
Pastor. Benny
Thodupuzha
MOB: 9447 82 83 83

OK

